सहकारी खेती

+

*155. **श्री शारदानन्द :**
श्री ना० स्व० शर्मा :
श्री अटल बिहारी वाजपेयी :
श्री ओ० प्र० त्यागी :

क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस समय देश में कितनी एकड़ भमि में सहकारी खेती होती है ;

(ख) क्या यह सच है कि आम किसान अब भी सहकारी खेती के पक्ष में नहीं है ;

(ग) क्या सरकार का विचार सहकारी खेती पर खर्च कम करने का है; और

(घ) यदि हां, तो इस दिशा में क्या कार्यवाही की जा रही है ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION (SHRI M. S. GURUPADASWAMY) : (a) The total acreage of land under cooperative farming is estimated to be approximately 11 lakh acres.

(b) No, the response varies from area to area.

(c) No, the outlay depends on actual requirements.

(d) Does not arise.

सहकारी खेती

*175. **श्री ना० स्व० शर्मा :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने कुछ राज्यों में सहकारी खेती के लिये सहकारी समितियों को भूमि आवंटित करने का निर्णय किया है ;

(ख) यदि हां, तो किन-किन राज्यों में इस प्रकार से भूमि आवंटित की जा रही है; और

(ग) इन आवंटियों को सरकार ने क्या सुविधायें प्रदान की हैं ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION (SHRI M. S. GURUPADASWAMY) : (a) Yes , Sir.

(b) Andhra Pradesh, Assam, Gujarat, Bihar, Jammu and Kashmir, Madhya Pradesh, Madras, Maharashtra, Mysore, Rajasthan and West Bengal.

(c) The cooperative farming societies are given financial assistance and technical guidance under the cooperative farming programme. The allottees also get financial assistance for land reclamation and for resettlement under the Centrally sponsored scheme for resettlement of landless agricultural labourers.

श्री शारदानन्द : क्या मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि वे कौन कौन सी जगहें हैं, जहां सब से पहले सहकारी खेती का प्रयोग किया गया और क्या आज उन जगहों पर सहकारी खेती सफलतापूर्वक चल रही है ?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : It is a big list. Various State Governments took up pilot projects and there are about 7720 co-operative farming societies till the end of June. It is very difficult to give the entire list.

श्री शारदानन्द : अध्यक्ष महोदय, मेरे प्रश्न का जवाब नहीं आया है । जिन स्थानों पर सब से पहले सहकारी खेती का प्रयोग किया गया था, आज यह स्थिति है कि वहां पर सहकारी खेती का प्रयोग असफल रहा है । अब नई जगहों पर वह प्रयोग किया जा रहा है । जो आंकड़े दिये गए है, वे नई जगहों के हैं । पुरानी जगहों में सहकारी खेती असफल रही है । मेरा प्रश्न यह है कि किन-किन स्थानों पर सब से पहले सहकारी खेती का प्रयोग किया गया और उन में से किन-किन स्थानों पर सफलता या असफलता हुई है ।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : I do not say that it was a failure. As I said, it was started on a pilot basis. A large number of societies were started and if the hon. Member sends another question, I am prepared to give the entire list of societies. There are a large number of societies. But I do not say that these pilot projects were a failure.

श्री शारदानन्द : जब देश का किसान सहकारी खेती को नहीं चाहता है, तो क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि इस प्रयोग को बन्द कर दिया जाये ?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : I did not say that the farmers do not want these co-operative farming societies. I have said that the State Governments have started a number of societies. I have given the figure. Nearly Rs. 730 lakhs have been invested in these co-operative farming societies, and we have some programme this year and next year also. Nearly Rs. 70 lakhs have been allotted this year for the co-operative farming societies.

श्री ना० स्व० शर्मा : मंत्री महोदय के कथनानुसार इस समय 11 लाख एकड़ में सहकारी खेती की जा रही है और करीब करीब साढ़े सात हजार को-आपरेटिव सोसाइटीज हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि किस प्रान्त विशेष में ज्यादातर सहकारी खेती की जा रही है और क्या मंत्री महोदय कम-से-कम एक या दो ऐसी को-आपरेटिव सोसाइटियां बता सकेंगे, जहां पर कृषक लोग पूर्णतया संतुष्ट हों और कुछ लाभ हुआ हो ?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : Maharashtra has done well in the cooperative farming movement. There are certain districts in certain States which have really done well. For instance, Dhulia district in Maharashtra, Sambalpur in Orissa, Bhavnagar in Gujarat and Jullundur in Punjab.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यदि खेती की पैदावार बढ़ानी है तो हमें प्रति एकड़ पैदावार बढ़ानी होगी। क्या केन्द्रीय सरकार ने जिस जमीन में केन्द्रीय सरकार स्वयं खेती करती है और जिस जमीन में कोआपरेटिव आधार पर खेती की जाती है कोई तुलनात्मक अध्ययन किया है जिससे पता लग सके कि प्रति एकड़ पैदावार किस ढंग की खेती में बढ़ी है ? अगर कोई तुलनात्मक अध्ययन किया है तो क्या इस अध्ययन की रिपोर्ट सदन की मेज पर रखी जायेगी ?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : We have not made any formal study, but our officials go round and collect figures of production in these cooperative societies. The figures collected indicate that the productivity and production in some cooperative farming societies are larger than the productivity and production in other areas.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय जिस आधार पर यह उत्तर दे रहे हैं वह रिपोर्ट सदन के सामने लायी जाय। अगर वह अधिकारियों की जांच की रिपोर्ट है तो उससे सदन को परिचित कराया जाय या अगर वह और किसी तरह की रिपोर्ट है तो उसके बारे में हमको बताया जाय।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : I said that no formal survey has been made so far. But the indications are that the production in these cooperative farming societies is not in any way lagging behind compared to the other areas.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY : When the question was put for the second time, he has changed the answer. If it is put for the third time, he will change it further.

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : I have not changed it. I have said, the production in these areas is not in any way lagging behind production in other areas. I also said that the indications are.....

SHRI RANGA : On what basis does he say that ?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : Are you satisfied with the reply, Sir ?

MR. SPEAKER : Suppose I am not satisfied. He has no figures; he has no confirmation. He has just expressed his opinion.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE : If you are not satisfied, you can pull up the minister.

श्री ओ० प्र० त्यागी : अध्यक्ष महोदय अभी मंत्री महोदय ने भारत के साढ़े सात लाख गांवों में सात हजार, साढ़े सात हजार कोआपरेटिव सोसाइटीज की सूचना दी है और उसमें से भी दो-तीन कामयाब हुई हैं ऐसी सूचना मंत्री महोदय ने दी है तो क्या यह सच नहीं है कि सहकारी खेती की असफलता का कारण यह है कि अधिकांश, केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारों के मंत्री इस योजना के खिलाफ हैं और यदि यह सहकारी खेती असफल सिद्ध हो रहा है तो सरकार का इतने लाखों रुपया क्यों इस पर व्यय किया जा रहा है ?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : Sir, I do not admit that this movement is a failure. It is a fact that we have so far started 7,720 societies till the end of June and we have only invested Rs. 730 lakhs. Still there is a large scope for development in this regard. This year the State Governments have indicated rather a smaller outlay for this purpose—only Rs. 70 lakhs has been indicated for this purpose. I think with the cooperation of non-official leaders and co-operation leadership in particular, this movement can take a greater stride.

श्री ओ० प्र० त्यागी : अध्यक्ष महोदय, जवाब उन्होंने नहीं दिया। मैं ने सवाल पूछा था कि क्या केन्द्र और प्रान्त के मंत्री जो हैं उनमें से अधिकांश इस के खिलाफ हैं ?

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : I am not aware.

श्री ओ० प्र० त्यागी : उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री चौधरी चरण सिंह इस के खिलाफ हैं।

MR. SPEAKER : No evidence can be given here. He says: "I am not aware."

श्री रणवीर सिंह : यह कोआपरेटिव फार्मिंग का नारा मिनिस्टर साहब समझ लें किसान के लिए एक रेड रैग टु ए बुल है और जितनी जल्दी इस को यह छोड़ दें उतना ज्यादा इन्सेन्टिव मिलेगा किसान को। मैं कहना चाहता हूं कि बजाय थोथे नारेबाजी के अगर किसानों को इन्सेन्टिव दें अच्छे बीज, अच्छी खाद और दूसरी फैसिलिटीज उस को दें चीप क्रेडिट वगैरह इस किस्म की चीजें उस को दें और यह रुपया जो बरबाद कर रहे हैं इस के बजाय सीधे उस को धन दे दें तो दुनिया भर का अनाज यह किसान पैदा करेगा। ऐसी कोई योजना है तो मैं यह कैटेगोरिकली कहने के लिए तैयार हूं कि किसान ऊपर उठेगा और कोआपरेटिव फार्मिंग का नारा बार-बार न दें।

SHRI M. S. GURUPADASWAMY : Sir, the success of this movement depends upon the people themselves. So far as Government is concerned, we encourage co-operative farming societies. It is essentially a non-official movement. If the farmers come forward to form such societies there is a scheme of assistance. Under that scheme the farmers are entitled for technical and financial assistance. We do really recognise the importance of co-operative farming and, as I said earlier, it requires the cooperation of a large number of non-official elements and, in particular, co-operation leadership in this regard. I know this is only the beginning. We have not made very much headway. If you want to make much headway we require the co-operation of all the non-official elements who believe in co-operative farming.

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, अभी इन्होंने फरमाया कि केवल 11 लाख एकड़ भूमि में सहयोगों खेती होती है जबकि कुल खेती हिन्दुस्तान में इस वक्त 31-32 करोड़ एकड़ के लगभग है।

श्री यशपाल सिंह : 40 करोड़ एकड़ है।

श्री मधु लिमये : ठीक है, जो प्रकाशित आंकड़े हैं इन के, वही मैं पेश कर रहा हूं । तो इसी से पता चलेगा कि वह एक आंखों में धूल झोंकने वाली बात है । शायद गुरुपद स्वामी जी को पता नहीं है क्योंकि वह इस तरफ बैठा करते थे । तो मेरे प्रश्न का जरा जगजीवन राम जी उत्तर देंगे तो अच्छा होगा । अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या उन को पता है कि नागपुर कांग्रेस में सात-आठ साल पहले सहयोगी खेती को मुख्य उद्देश्य बना कर जनता के हाथ में यह खिलौना दिया गया जैसे कि अवाडी में समाजवाद का खिलौना दिया गया ? तो मैं जानना चाहता हूं कि जब कि इन का यह मुख्य कार्यक्रम था सहयोगी खेती के बारे में और उस वक्त का जो चुनाव घोषण-पत्र था उस में भी यह मुख्य बात थी तो क्या मंत्री महोदय गंभीरता से इस के बारे में सोचेंगे कि हमेशा जो नये-नये नारे और नये-नये खिलौने आप देते जाते हैं, अभी इन दिनों में आप निजी कोष और बैंकों के राष्ट्रीयकरण का दे रहे हैं, हो सकता है कि यह भी नहीं होगा और बाद में कोयले के राष्ट्रीयकरण का यह नारा देंगे तो क्या मंत्री महोदय गंभीरतापूर्वक सोचेंगे कि इस तरह के कार्यक्रम अपनाने के पहले उन का क्या मतलब है और उस के लिए क्या ठोस कदम उठाने पड़ते हैं । उन के बारे में सोच-विचार कर कार्यक्रम निश्चित करना चाहिये, नहीं तो स्थिति यह होगी कि जो मुख्य कार्यक्रम जहां 32 करोड़ एकड़ खेती का था वहां सिर्फ 11 लाख एकड़ में ही सहकार का काम हो सका ।

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री जगजीवनराम): मधु लिमये जी खिलौने के आदी हैं ।.....

श्री मधु लिमये : मैं नहीं आप आदी हैं, आप हैं ।

श्री जगजीवन राम : भाई, जवाब देने दीजिए, क्यों घबराते हैं.....

श्री रामसेवक यादव : अपनी आदत दूसरों पर थोपते हैं ।

श्री जगजीवन राम : बार-बार आप ही नाम लेते हैं । यह मानने में कोई संकोच की गुंजाइश नहीं है कि सहकारी खेती की प्रगति कोई सन्तोषजनक नहीं है, लेकिन साथ ही साथ यह भी मान कर चलना है कि सहकार-आन्दोलन एक स्वेच्छापूर्ण आन्दोलन है, सिर्फ सरकारी यन्त्र से चाहें कि हम सहकार-आन्दोलन को पनपायें—जो ऐसा मानते हैं, तो वह गलत है ।.....

श्री रामसेवक यादव : लेकिन प्रोत्साहन तो मिले सरकार से ।

श्री जगजीवन राम : प्रोत्साहन सरकार दे सकती है, लेकिन प्रोत्साहन लेने वाले पात्र भी तो तैयार होने चाहियें । जब तक पात्र तैयार नहीं होता है, तब तक प्रोत्साहन आ नहीं सकता और बिना पात्र के जहां प्रोत्साहन करने का यत्न किया गया, वहां मैं मानता हूं कि सही सहकार नहीं होता है, उस को बनावटी सहकार कह सकते हैं । इसलिये मैं कहूंगा कि इस में किसी एक दल विशेष के करने से यह चीज होने वाली नहीं है, इस में तो सभी लोग जो इस में विश्वास रखते हों, जो किसी भी दल के हों—सहकार आन्दोलन में सभी दलों के लोग हैं—जब तक वे उस में उत्साह के साथ, स्फूर्ति के साथ हिस्सा नहीं लगे, मैं ऐसा मानता हूं कि सिर्फ सरकारी प्रोत्साहन से और प्रयत्न से यह काम सम्भव नहीं होगा ।

श्री मधु लिमये : असफलता का कारण क्या रहा है ?

श्री जगजीवन राम : वे तो कई रहे हैं । यह भी रहा है कि हमारी जो संस्कृति बन गई है—व्यक्तिगत सम्पत्ति की पवित्रता—वह भी इस के रास्ते में बहुत कुछ रुकावट है और उस भावना को जब तक हम दूर नहीं कर लेते हैं, मैं ऐसा मानता हूं कि जिस

पैमानें पर सहकारी खेती का विस्तार होना चाहियें, उस में कठिनाई आती है।

श्रीमती सुशीला रोहतगी : मान्यवर, सहकारिता आन्दोलन चलाने के पूर्व सरकार ने, इतने बड़े कार्यक्रम को चलाने के पूर्व क्या सरकार ने इन सब बातों पर अच्छी तरह से विचार नहीं किया था? यदि किया था तो उन्होंने अपने ध्यान में यह बात भी रखी होगी कि इस काम में जनता के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। तो मैं जानना चाहूंगी कि इन सब बातों को देखते हुये और मन में पूर्णतः सन्तुष्ट न होते हुए क्या आप इस पर पुनः विचार करेंगे कि यह सहकारिता आन्दोलन बनावटी आन्दोलन न रह कर सही रूप में आन्दोलन बन जाय?

श्री जगजीवन राम : जी हां। माननीय सदस्या जैसे उत्साही लोग इस काम में आ जांय तो मैं समझता हूं कि इस में असल उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है।

SHRI N. SHIVAPPA : What is this? Only some members are called. What is this *galata*?

MR. SPEAKER : I want the hon. Member to withdraw that expression. There is no *galata*. I am giving opportunity to members from all sides. I called a member from his party also earlier. He should not have used such a term.

SHRI N. SHIVAPPA : Sir, I have been trying to catch the eye....

MR. SPEAKER : Will he now kindly resume his seat?

SHRI N. SHIVAPPA : Yes, Sir.

श्री गुलाम मोहम्मद बक्शी : जनाब का बहुत शुक्रिया कि इस तरफ भी नजर पड़ी और हमारी बारी आई। जनाब, जहां तक कोआपरेटिव फार्मिंग का ताल्लुक है, जब इस को शुरू किया गया था तो इस को दो मकसदों के लिये शुरू किया गया था—एक तो यह कि मौडल फार्म्ज होंगे जिसमें किसानों को सिखाया जायगा कि वह अपने बीज को कैसे बढ़ाये, दूसरे यह था कि इन फार्म्ज में बेहतरीन किस्म के बीज पैदा किये जायेंगे और किसानों को दिया जायगा ताकि ईल्ड-पर-एकड़ बढ़ जाय। इन दोनों बातों को सामने रख कर मैं यह जानना चाहता हूं कि किसी भी कोआपरेटिव फार्म में, 11 लाख एकड़ में ये फैले हुए हैं, ईल्ड क्या निकला है और इन में से कितना बीज की शक्ल में हिन्दुस्तान में तकसीम करते हैं। इन पर पैसा खर्च हो वह ठीक है, लेकिन हमारी पैदावार कितनी बढ़ी इन माडल-फार्म्ज के ज़रिये यह देखा जाना चाहिये। मैं एक फार्म का नाम लूं—सूरतगढ़ का फार्म उस की पर-एकड़-ईल्ड क्या है?

جناب کا بہت شکریہ کہ اس طرف بھی نظر پڑی اور ہماری باری آئی ۔ جناب جہاں تک کواپریٹو فارمنگ کا تعلق ہے جب اس کو شروع کیا گیا تھا تو اس کو دو مقصدوں کے لئے شروع کیا گیا تھا ۔ ایک تو یہ کہ موڈل فارمز ہونگے جس میں کسانوں کو سکھایا جائیگا کہ وہ اپنے بیج کو کیسے بڑھائیں ۔ دوسرے یہ تھا کہ ان فارمز میں بہترین قسم کے بیج پیدا کئے جائینگے اور کسانوں کو دیا جائیگا تاکہ آیلڈ پر ایکڑ بڑھ جائے ۔ ان دونوں باتوں کو سامنے رکھکر میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ کسی بھی کواپریٹو فارم میں جو ۱۱ لاکھ ایکڑ میں پھیلے ہوئے ہیں آیلڈ کیا نکلی ہے اور اس میں سے کتنا بیج کی شکل میں ہندوستان میں تکسیم کرتے

ہیں - ان پر پیسہ خرچ ہو وہ ٹھیک ہے لیکن ہماری پیداوار کتنی بڑھی ان ماڈل فارمز کے ذریعہ یہ دیکھا جانا چاہیئے - میں ایک فارم کا نام لوں——سورت گڑھ فارم - اس کی پر ایکڑ ایلڈ کیا ہے ؟]

SHRI JAGJIVAN RAM : That is not a co-operative farm.

SHRI GHULAM MOHAMMAD BAKSHI : Government farms or co-operative farms.

MR. SPEAKER : No discussion please. This is Question Hour.

SHRI GHULAM MOHAMMAD BAKSHI : I have put my question ; I just want to know the reply.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY : Is there no reply to offer from the Government side ?

श्री मधु लिमये: अध्यक्ष महोदय, क्या हुआ बक्शी साहब के प्रश्न का ?

SHRI M. S. GURUPADSWAMY : I do not have the figures about the various farms here. It is true that the main objective of the co-operative farming movement was to encourage the small farmers to unite under the co-operative in order to acquire better skills and better techniques so that there may be higher production in these areas. These are the broad objectives and there is no question of disputing these objectives. These objectives will remain with us. Now, the question is whether the co-operative movement has got to go on the voluntary basis. Already the hon. Minister has replied that this has got to be a voluntary movement. He has also said that it depends on the non-official element, in particular the members of the co-operative movement, to take up this movement seriously. It depends on their co-operation and the Government is there only to assist them.

SHRI RANGA : If people do not want it, why do you persist in it ?

SHRI M. S. GURUPADSWAMY : We cannot officialise the whole movement.

श्री गुलाम मोहम्मद बक्शी : मैं जानना चाहता हूं कि ईल्ड-पर-एकड़ किसी भी कोआपरेटिव फार्म की क्या है ?

[——————— मैं जानना चाहता हूं कि ایلڈ - پر - ایکڑ کسی بھی کواپریٹو فارم کی کیا ہے -]

Is there any difference in the yield ?

SHRI GADILINGANA GOWD : May I know if it is a fact that the Government is not giving adequate assistance to the societies formed with private holdings and large amounts are given to societies which are formed with Government lands as well as temple lands ? If it is not a fact, what is the amount given to societies formed by private holdings and the amount given to societies formed by Government lands as well as temple lands ?

SHRI M. S. GURUPADSWAMY : There is a scheme of assistance drawn up which does not vary from society to society. According to the scheme technical and financial assistance is provided. All the norms have been set down. Therefore, there is no question of discrimination in this regard. Regarding Government land, whenever the question of release of Government land is taken up by the State Governments we normally give preference to co-operative farming societies. We encourage societies to form with Government land and assistance under the scheme will also be available for these societies.

SHORT NOTICE QUESTION

दिल्ली के लिए टेलीफोन सलाहकार समिति

S. N Q. 1. **श्री कंवरलाल गुप्त** : क्या **संचार** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार द्वारा दिल्ली के लिये गठित की गई टेलीफोन सलाहकार समिति में दो को छोड़कर शेष सभी सदस्य कांग्रेस दल के हैं ;